21 वीं शती का हिंदी साहित्य : नव विमर्श

संपादक

डॉ. एस. वाय. होनगेकर

डॉ. आरिफ़ महात

सह संपादक

विश्वनाथ सुतार

ए. बी. एस. पब्लिकेशन

वाराणसी-221 007

Scanned by CamScanner

प्रकाशक
ए.बी.एस. पब्लिकेशन
आशापुर, सारनाथ
वाराणसी-221 007 (उ० प्र०)
मो०: 09450540654, 09415447276

ISBN : 978-93-86077-64-6

© संपादकाधीन

प्रथम संस्करण : 2018

मूल्य : 950.00 (नौ सौ पचास रुपये मात्र)

शब्द-संयोजन : विष्णु ग्राफिक्स

मुद्रक : पूजा प्रिण्टर्स
बसंत विहार, नौबस्ता

IKKISAVI SHATI KA HINDI SAHITYA : NAV VIMARSH
By Ed. Dr. S. Y. Hongekar, Dr. Arif Mahat
Co. Ed.Dr. Vishvanath Sutar
Price : Rs. Nine Hundred Fifty Only

समर्पण

शिक्षण महर्षि डॉ. बापूजी साळुंखे जी
और
संस्था माता श्रीमती सुशीलादेवी साळुंखे जी
को समर्पित....

Scanned by CamScanner

20. वृद्घ विमर्श
('रेहन पर रग्घू' उपन्यास के संदर्भ में) 287–290
सौ. सुपर्णा संसुद्धी

21. 21 वी सदी के हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श 291–294
प्रा० स्मिता मिस्त्री

22. मृणाल पांडे के साहित्य में वृद्ध–विमर्श 295–299
डॉ संतोष राजपाल नागुर

23. स्वाति तिवारी की कहानियों में वृद्ध विमर्श 300–304
प्रा. सुधाकर कल्लाप्पा इंडी

24. हिंदी कहानी और वृद्ध–विमर्श 305–308
राठोड़ सुरेश

25. किसानों की बदकिस्मती का जीता जागता आईना 'अकाल में उत्सव' 309–313
इन्द्रदेव शर्मा

26. भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी उपन्यासों में वर्णित वृद्ध विमर्श 314–318
रोहिता केतन राऊत

27. उदय प्रकाश की कहानी 'छप्पन तोले का करधन' में चित्रित वृद्ध समस्या 319–323
विवेक कुमार चौरसिया

28. 21वीं सदी के हिंदी साहित्य में नव विमर्श : विविध आयाम 324–326
डॉ. सरोज पाटील

29. गीतांजलि श्री कृत 'इति' कहानी में वृद्ध विमर्श 327–330
सविता योहान मकासरे

4. तकनीकी विमर्श

1. कहानी साहित्य में तकनीकी विमर्श 331–335
डॉ. सौ. शोभा माणिक पवार

2. हिंदी के विकास में जनसंचार माध्यमों का योगदान 336–340
प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे

3. हिंदी वेब साहित्य और तकनीकी विमर्श 341–344
प्रा. सागर रघुनाथ कांबले

4. कम्प्यूटर में हिंदी के प्रयोग की समस्याएँ 345–348
गणेश ताराचंद खैरे

5. तकनीकी पहल का बेबाक बयान : जानकीदास तेजपाल मैनशन 349–353
डॉ. दीपक रामा तुपे

6. 21 वी सदी के हिंदी साहित्य में तकनीकी विमर्श 354–357
प्रा. डॉ. एम. ए. येल्लूरे

7. 21वीं सदी के हिन्दी साहित्य में नव विमर्श विविध आयाम 358–362
प्रा. अंजना एल. पटेल

8. "21 वी सदी के हिंदी साहित्य में आधुनिकतम प्राविधान के विविध आयाम" 363–366
प्रा. बाबासाहेब तुकाराम साबले

5. राष्ट्रवाद भाषावाद विमर्श

1. राष्ट्रवाद की भूमिका 367–371
नागेन्द्र प्रसाद सिंह पटेल

2. अस्वस्थ तिब्बत–तरूण भटनागर की भूगोल के दरवाजे पर कहानी के संदर्भ में 372–375
प्रा. जयसिंग मारूती कांबळे

Scanned by CamScanner

संदर्भ :

1. द्विभाषिक सॉफ्टवेयरों में अनुकूलन क्षमता – डॉ. राजेश्वर गंगवार
2. श्रीकमलेश श्रीवास्तव का लेख – हिंदुस्तान टाइम्स, 12 सितंबर 2004
3. Computer Fundamentals – Goel, Anita person
4. Introduction to computer – Ms. Shikha Nutiyal

गणेश ताराचंद खैर
छात्र–पीएच.डी.
हिंदी विभाग,
चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय,
शिरूर, जि. पुणे
मोबाईल नं. :9850930777
ई–मेल : gt.khaire@g-mil.com

5

तकनीकी पहल का बेबाक बयान : जानकीदास तेजपाल मैनशन

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। समग्र विश्व में उदारीकरण, निजीकरण, भूमंडलीकरण की हवा बह रही है। इनमें भूमंडलीकरण की हवा ने समग्र विश्व का भूमंडीकरण कर दिया है। आज पूरा विश्व वैश्विक ग्राम में तब्दील हो गया है। इसमें तकनीक का योगदान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। तकनीक के कारण हम एक–दूसरे के करीब तो आ चुके हैं, लेकिन सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में एक–दूसरे से अपरिचित हो रहे हैं। इसी परिचय की वजह से हमारा साहित्यकार भी तकनीक के प्रभाव से प्रभावित है। तकनीक के अच्छे और बुरे प्रभाव हमारे समाज पर पड़ रहे हैं। हमारी देश की व्यवस्था पर तकनीक का असर हो रहा है, जिसके कारण हमारी व्यवस्था में परिवर्तन आ रहा है। अलका सरावगी सन् 2015 ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' उपन्यास तकनीक के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष को रेखांकित करता है।

प्रस्तुत उपन्यास तकनीक से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं को हमारे सम्मुख रखता है और देश पर आने वाले खतरों के प्रति सजग कराता है। उपन्यास की कथा कोलकात्ता के सेंट्रल ऐवन्यू पर स्थित जानकीदास तेजपाल मैनशन नाम की अस्सी परिवारों की एक खड़ी इमारत के इर्द–गिर्द घूमती है। उपन्यास का नायक जयगोविंद सन् 1970 ई. के दशक में कोलकाता के जादवपुर विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करता है और पिताजी एडवोकेट बाबू उन्हें अमेरिका के मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में कम्प्यूटर इंजीनियरिंग की मास्टर डिग्री करने भेजते हैं। बेटे जयगोविंद को अमेरिका भेजने के लिए माँ का विरोध है, लेकिन पिता के आग्रह से वह अमेरिका में कम्प्यूटर की मास्टर डिग्री करता है। अमेरिका में सात साल बीत जाने के बाद जयगोविंद कोलकाता लौट आता है। तब पूर्वी भारत में आठ आई. बी. एम. कम्प्यूटर थे, जबकि अमेरिका में एक–एक बिल्डिंग में तीन–तीन सौ कम्प्यूटर लगते थे। कम्प्यूटर इंजीनियर को बड़े शक ही निगाह से देखा जाता था क्योंकि एक कम्प्यूटर इंजीनियर के भारत में आ जाने के कारण

Scanned by CamScanner

कई लोगों की नौकरी पर गाज गिरती थी। इसलिए यहाँ के नेता तकनीक का विरोध करते रहें क्योंकि एक आई. बी. एम. कम्प्यूटर एक लाख क्लर्कों का एक दिन का काम एक घंटे में कर देता था। इस संदर्भ में लेखिका उपन्यास में लिखती है–''पूर्वी भारत में कुल आठ आईबीएम कम्प्यूटर थे जबकि अमेरिका में अकेली इम्पायर स्टेट बिल्डिंग में तीन सौ कम्प्यूटर थे। एक विषाल कम्प्यूटर को रखने और उसे ठंडा करने की मशीन लगाने के लिए बड़े–बड़े कमरों की जरूरत होती थी। ऊपर से कम्प्यूटर इंजीनियर को बड़े शक ही निगाह से देखा जाता था कि जाने वह कितने लोगों की नौकरियाँ अकेले हजम कर जाएगा। 1967 में कम्युनिस्ट लीडर के. अनिरुद्ध ने संसद में चेतावनी दी थी कि एक आईबीएम 7093 का एक कम्प्यूटर एक लाख क्लर्कों का एक दिन का काम एक घंटे से भी कम समय में कर लेगा। इसलिए इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर एक लाख क्लर्कों का एक दिन का काम घंटे से भी कम समय में कर लेगा। इसलिए इलेक्ट्रॉनिक कम्प्यूटर का आयात बंद कर दिया जाए। तब किसने सोचा था कि एक दिन भारतीय लोग इसी कम्प्यूटर के द्वारा दुनिया का सारा काम हड़प लेंगे और दुनिया उनसे रश्क करेगी।''[1] स्पष्ट है कि तकनीक के आगमन से कई लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ता है। कुछ ही व्यक्ति कई दिनों का काम कुछ घंटों में कर देते हैं। दरअसल तकनीक का यह अच्छा बदलाव है। हमारे देश में तकनीक का आगमन हो गया और बहुत सारे उद्योगों में कम्प्यूटर लगाए गए है। प्रारंभिक दौर में भारतीय लोग तकनीक का विरोध करते थे, लेकिन आज उसी तकनीक ने दुनिया का सारा काम हड़प लिया है।

हमारे देश में तकनीकी आगमन जरूर हुआ, लेकिन विदेशों में जब तकनीक बंद होती तब भारत में उसका आगमन हो जाता। विदेश की पुरानी तकनीक को हम जब अपनाते हैं तब तक वहाँ पर नई तकनीकी खोज हो जाती है और हम पुरानी तकनीक अपनाने में भी हिचकिचाहट महसूस करते हैं। इसी स्थिति का जिक्र अलका सरावगी के 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' उपन्यास में मिलता है। उपन्यास का नायक जयदीप अमेरिका से आकर हिंद मोटर कंपनी में नौकरी ज्वॉइन करता है। तब वहाँ का सिस्टम मैनेजर अगरवाल पहले दिन से उसे काम पर आने से रोकना चाहता है। वह जयदीप को रोकने के लिए आई. बी. एम. कंपनी का हवाला देता है कि एपटिट्यूड टेस्ट उतीर्ण किए बिना कंपनी में कोई काम नहीं करेगा। तब जयदीप उसे कहता है–''आप जिस 'यूनिकोड' भाषा का कम्प्यूटर में इस्तेमाल कर रहें हैं, वह अब अमेरिका में पढ़ाई नहीं जाती। मैंने तो सिर्फ उसे इसलिए अपने–आप पढ़ा है ताकि यहाँ काम कर सकूँ।' .... 'आप जिस कम्प्यूटर का यहाँ इस्तेमाल कर रहे हैं, वह आई. बी. एम. ने पाँच साल पहले यानी 1966 में बनाना ही बंद कर दिया था।''[2] स्पष्ट है कि भारतीय व्यक्ति कोई भी नई तकनीक आसानी से नहीं अपनाता। जब उसे अपना लेता है तब तक वह

तकनीक उतनी पुरानी हो चुकी होती है कि वह काम करना बंद कर देती हैं। स्वयं जयदीप के शब्दों में–''जिस देश में एक नया टेलिफोन कनेक्शन लेने में दस साल लग जाते हैं और आने के बाद भी वह काम नहीं करता, उस देश में रहना है, तो ऐसे ही रहना होगा। अपने बूते पर जो कुछ वह कर सकेगा, उतना जरूर करेगा। इनके कम्प्यूटर को तीन शिफ्ट पर लाकर दिखाएगा।''[3] स्पष्ट है कि भारत से विदेश में पढ़ाई के लिए गए छात्र जब भारत में आते हैं तब उसे यहाँ के लोग नहीं अपनाते। वह न इधर का रह जाता है और न उधर का। उसका मिजाज और यहाँ के लोगों का मिजाज मेल नहीं खाता। इसी कारण जयदीप सबकुछ अपने बूते पर करना चाहता है फिर भी यहाँ के लोग उसे विरोध करते हैं। ''शेयरहोल्डरों के हिस्से और वितरण की प्रणाली का जो काम वे लोग कम्प्यूटर पर करने में चार से छह घंटे लगते हैं, उसे वह बीस मिनट में कर सकता है, तो मीटिंग में सन्नाटा छा गया था। घुरघुर के अंदर की घुरघुराहट बंद हो गई थी।''[4] स्पष्ट है कि तकनीक का जानकार व्यक्ति कुछ घंटों का काम कुछ मिनटों में कर देता है, लेकिन ऐसे सच्चाई से काम करने वाले लोंगों का हमारे देश में हमेशा ही विरोध होता रहा है। दरअसल हम परिवर्तन नहीं चाहते, नया कुछ सीखना नहीं चाहते, एक बार भजबूरन अपनाई गई तकनीक का पीछा नहीं छोड़ते। इसमें चाहे कितना भी समय जाया जाए और कितने भी रुपए बिजली पर खर्च हो जाए। लेकिन वे नई तकनीक को हरगिज़ नहीं अपनाते, और तो और नई तकनीक के सहारे जो घंटों का काम मिनटों में करना चाहते हैं उन्हें टिकने नहीं देते। जयदीप बैठक में अपने बॉस से पूछता है–''मुद्दा यह है कि आप परिवर्तन चाहते हैं या नहीं ? हम दो सौ स्क्वायर फीट जगह को घेरकर पंद्रह के. वी. पावर खाने वाले इस पुराने मॉडल के कम्प्यूटर पर तीन सौ रुपए प्रति घंटे खर्च करते हैं। आप तीन शिफ्ट में जितना काम इस कम्प्यूटर से करवा रहे हैं, मैं उतना ही काम दो शिफ्ट में करवा सकता हूँ।''[5] स्पष्ट है कि भारतीय व्यक्ति हमेशा पुरानी मानसिकता में जीना पसंद करता है। वह परिवर्तन की चाहत कभी नहीं रखता। जयदीप कंपनी के मुनाफे की बात करता है लेकिन बॉस ही कंपनी का फायदा नहीं चाहता है क्योंकि हमारा देश बिचौलियों द्वारा चलाया जाता है। इसलिए वाइस प्रेसिडेंट जयदीप को कंपनी के तौर–तरीके और उसूलों की बात कर चुप कर देता है। इतना ही नहीं, उसे अनुशासन में रहकर तरक्की करने की बात करता है। इसमें चाहे कंपनी फायदा हो या नुकसान। वाइस प्रेसिडेंट की बातों का सिर–पैर समझ में नहीं आने से जयदीप कहता है–''सर, मैंने कंपनी का क्या कोई नियम अनजाने में तोड़ दिया है ? प्लीज मुझे बताइए कि अगर मैं तीन शिफ्ट की जगह दो शिफ्ट में काम करवाकर कंपनी का फायदा करवाना चाहता हूँ ? आप कह सकते हैं कि मुझे मीटिंग में यह बात न बोलकर अलग से कहनी चाहिए थी। पर सर, जब बात कंपनी के फायदे की हो, तो मैं कह देता। आय एम सॉरी, पर मैं इसे अनुशासन

Scanned by CamScanner

तोड़ना नहीं मान सकता।"[6] जयदीप ने न कंपनी का नियम तोड़ा है और न कंपनी का नुकसान किया है। फिर वाइस प्रेसिडेंट उसे कंपनी के तौर–तरीके और उसूल सीखाते हैं, इसी कारण जयदीप गुस्सा हो जाता है और हिंदी मोटर फैक्टरी में त्यागपत्र देता है।

आज इन्सान को विश्व को डि–कोड कर सकता या सुलझा सकता है। तकनीक मानव जीवन का हर कार्य करने लगी है। भविष्य में थोड़ी उन्नत तकनीक और जादू में कोई अंतर नहीं रहेगा। एक दिन मनुष्य इस समग्र विश्व को समझने की टेकेनोलोजी निकालकर ही रहेगा। इसी स्थिति का प्रमाण अलका सरावगी के 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' उपन्यास में मिलता है। प्रस्तुत उपन्यास का नायक जयदीप को पैंतीस साल पुरानी बातें याद आती है, जिसका उसे अफसोस हो रहा है। जयदीप शेयरों की उठा–पटक में उसका नुकसान हो जाता है तो वह उसमें अंधविश्वास नहीं मानता। किस्मत की बात भी वह वैज्ञानिक तरीके से सोचता है–"सृष्टि को 'डि–कोड' करना या सुलझाना असंभव नहीं है। अगर एक कम्प्यूटर अनंत हिंसाब–किताब रख सकता है, तो क्या ईश्वर नाम का कोई शख्स या 'एलियन' या मशीन ऐसी प्रोग्रामिंग नहीं कर सकती कि सबकुछ पहले से तय हो ? नोस्ट्रेडेमस जैसा दिमाग हो तो उस प्रोग्रामिंग को पकड़ा क्यों नहीं जा सकता ? 'रामा' का लेखक आर्थर क्लार्क कहता है कि थोड़ी भी उन्नत टेकेनोलोजी और जादू में कोई अंतर नहीं होता। लगता है कि किसी–न–किसी दिन हम इस सृष्टि को समझने की टेकेनोलोजी निकाल ही लेंगे।"[7] स्पष्ट है कि भविष्य में तकनीक उन्नत होगी, जो सृष्टि को डि–कोड करेगी, सृष्टि को सुलझाएगी। यहाँ तक कि एक दिन यह तकनीक सृष्टि को ही समझेगी।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अलका सरावगी लिखित 'जानकीदास तेजपाल मैनशन' उपन्यास सृष्टि को डि–कोड करके समझने–समझाने और सुलझाने की बात करता है। उन्नत तकनीक और जादू में कोई अंतर नहीं मानता। एक समय था कि कम्प्यूटर इंजीनियर को शक की निगाह से देखा जाता था क्योंकि वह अकेला व्यक्ति कई श्रमिकों के बेरोजगारी का कारण बन जाता था। वह कई शिफ्टों का काम कुछ शिफ्टों में करता है। इतना ही नहीं, कई घंटों का काम कुछ मिनटों में करता है, इसी कारण उसका हमेशा विरोध होता है। इसका मुख्य कारण है–भारतीय व्यक्ति हमेशा पुरानी मानसिकता में जीना पसंद करता है। वह परिवर्तन कभी नहीं चाहता। भारत में जब नई तकनीक का आगमन होता है, तब तक वह तकनीक विदेश में पुरानी होती है या तो तकनीक बंद हो चुकी होती है। यहाँ तक कि विदेश की पुरानी तकनीक हम जब अपनाते हैं तब वहाँ नई तकनीक का जन्म होता है। कोई व्यक्ति नई तकनीक का उपयोग कर कंपनी के फायदे की बात करता है तो उसे कंपनी के तौर–तरीके और उसूल सीखाने के नाम पर चुप किया जाता है, उसे त्यागपत्र देने के लिए मजबूर किया जाता

है, लेकिन नए तकनीकी बदलाव को आसानी से नहीं अपनाया नहीं जाता; जो तकनीक हमारे उन्नत जीवन का संकेत देती है।

संदर्भ :

1. अलका सरावगी, जानकीदास तेजपाल मैनशन (राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110 002, प्रथम संस्करण सन् 2015 ई., पृ.–94)
2. वही, पृ.–117
3. वही, पृ.–125
4. वही, पृ.–121
5. वही, पृ.–121
6. वही, पृ.–125
7. वही, पृ.–132

डॉ. दीपक रामा तुपे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
दत्ताजीराव कदम आर्टस्, साइन्स एंड कॉमर्स कॉलेज,
इचलकरंजी।
ई–मेल : dipaktupe1980@gmail.com
मोबाइल : 08805282610, 08793878240

●

Scanned by CamScanner